

पी-एच.डी. प्रवेश परीक्षा

विषय – दर्शन शास्त्र

–पाठ्यक्रम–

(शिक्षा सत्र-2020-21 से मान्य)

अ.

- 1- भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं, भारतीय दर्शन में योग का महत्व।
- 2- योग की दार्शनिक पृष्ठभूमि;—सांख्य-दर्शन, सांख्य और योग में संबंध, पुरुष-सिद्धि, बंधन।
- 3- सांख्य-प्रकृति सिद्धि, स्वरूप, विकासवाद एवं कैवल्य।
- 4- गीता में योग के विविध रूप।

ब.

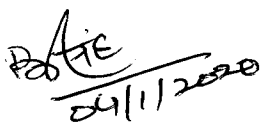
- 1- अनुप्रयुक्त दर्शन-अर्थ, स्वरूप एवं महत्व, दर्शन एवं अनुप्रयुक्त दर्शन में संबंध।
योग का अर्थ, परिभाषा, महत्व व उद्देश्य।
- 2- योग का उद्भव एवं विकास, योग में साधक एवं बाधक तत्व।
- 3- योग सूत्र।
- 4- अष्टांग योग तथा कर्म योग, भक्ति योग एवं ज्ञान योग, हठ योग, मंत्र योग, लय योग एवं क्रिया योग।

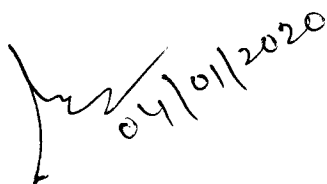
स.

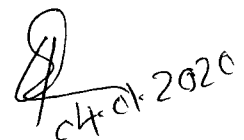
- 1- षट्कर्म वर्णन :- धौति, वस्ति, नेति, नौलि त्राटक, कपाल-भाति की विधि व लाभ।
- 2- कुंडलिनी का स्वरूप, चक्रों के स्वरूप, जागरण के उपाय।
- 3- बंध मुद्रा वर्णन :- महामुद्रा, महाबंध, उड्डीयान बंध, जालंधर, मूलबंध।
- 4- घेरण्ड संहिता में वर्णित षट्कर्म-धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक, कपालभाति की विधि सावधानियां व लाभ।

द.

- 1- उपनिषद, बौद्ध, जैन मतानुसार चेतना।
- 2- चेतना का स्वरूप, सांख्य-योग एवं मीमांसा एवं अद्वैत वेदांत मत में, आत्मा, ब्रह्म, पुरुष, सिद्धि, पुरुष बहुत्व, श्री अरविंद।


04/11/2020


04/11/2020


04.11.2020

य.

- 1- पुरुषार्थ, कर्मफल सिद्धांत, संस्कार एवं पुर्नजन्म ।
- 2- चित्त, चित्त भूमियां, चित्त वृत्तियां ।
- 3- पंचक्लेश, दुःख का स्वरूप, चतुर्व्यूहवाद, विवेकख्याति, सप्तधाप्रज्ञा ।
- 4- स्वास्थ्य की परिभाषा, स्वस्थ पुरुष के लक्षण, रात्रिचर्या -निद्रा एवं ब्रह्मचर्य, ऋतुचर्या ।

र.

- 1- आहार की परिभाषा, आहार के गुण व कर्म । आहार के घटक द्रव्य : कार्बोज, वसा, प्रोटीन, खनिज पदार्थ, जीवनीय तत्व जल ।
- 2- आहार की मात्रा व काल, संतुलित आहार । दुग्धाहार, फलाहार, अपक्वाहार, मिताहार उपवास ।
- 3- शाकाहार व मांसाहार के अवगुण । अंकुरित आहार के लाभ, योगाभ्यासी के लिए निषिद्ध आहार ।

ल.


- 1- निम्नलिखित रोगों का लक्षण- कारण व यौगिक उपचार :-
अग्निमांद्य, अजीर्ण, पीलिया, कोष्ठबद्धता, अम्लपित्त, कोलाइटिस, दमा, उच्च व निम्न रक्तचाप, साइटिका, आमवात; अर्थराइटिस, वातरक्त; गठियाबद्ध ।
- 2- आधुनिक जीवन शैली में योग की प्रासंगिकता, सावधानियां एवं निदान
(खानपान व्यवस्था, भविष्य के प्रति अनिश्चितता, मानसिक अवसाद, द्रुत जीवन शैली आदि के विशेष संदर्भ में) ।


व.


- 1- गीता में योग की प्रवृत्ति व स्वरूप । योग के भेद-कर्मयोग, भक्ति योग, ज्ञानयोग, ध्यान योग का स्वरूप । भक्त, कर्मयोगी व ज्ञानयोगी व ज्ञानी तत्व के लक्षण, स्थितप्रज्ञ का तत्व दर्शन ।
- 2- गीता का निष्काम कर्मयोग, ज्ञान, भक्ति एवं कर्म योगों का समन्वय ।

श.

- 1- प्राणायाम की परिभाषाएं, प्राणायाम के गुण, विशेष प्राणायाम की प्रक्रिया का वैज्ञानिक विवेचन, श्वसन तंत्र की क्रिया विधि-प्राणायाम के संदर्भ में, दीर्घश्वसन एवं प्राणायाम में अंतर ।
- 2- प्राणशक्ति के पाँच स्वरूप, विभिन्न रोगों के निदान में प्राणायाम की उपयोगिता, आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययन के संदर्भ में ।
- 3- शरीर रचना का सामान्य परिचय, चलन तंत्र, रक्त वाहिका तंत्र, पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, मूत्र-जनन तंत्र, तंत्रिका तंत्र, उत्सर्जन तंत्र तथा संतुलित आहार ।
- 4- परिसंचरण तंत्र, हृदय संरोध के कारण एवं बचाव के यौगिक सावधानियां एवं निदान, रक्त की संरचना ।


04.01.2020


04/01/2020


04-01-2020